सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का प्रथम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित ''प्राचीन भारत में राष्ट्रचेतना'' विषयक लेख में राष्ट्रिय एकता एवं उसके सांस्कृतिक तथा पौराणिक आधारों पर राष्ट्रभक्ति सन्दर्भित चिन्तन प्रस्तुत हुआ है। तत्पश्चात् डॉ. डी.सी. चौबे द्वारा लिखित 'भारतीय संस्कृति का विश्वसंचार : केदाह या केदारम्' में भारत से बाहर विद्यमान भारतीय संस्कृति के महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्रोतों पर ऐतिहासिक उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। प्रो. वैद्य बनवारीलाल गौड़ एवं डॉ. विश्वावसु गौड़ द्वारा लिखित ''शीत ऋतु में स्वास्थ्यसंरक्षण'' जन सामान्य के लिए स्वास्थ्य चेतना का सम्प्रेरक है तथा स्वास्थ्य संरक्षण के उपाय रूप में विविध ओषधीय प्रयोगों की उपयोगिता को प्रदर्शित करता है। श्री सीताराम गुप्ता द्वारा लिखित 'संकल्प की पूर्णता' लेख में जनसामान्य को दृढ़तापूर्वक सांसारिक द्वन्द्वों से संघर्ष की प्रेरणा सद्भावनाओं के संरक्षण को विज्ञापित करती है। वैद्य गोपीनाथ पारीक 'गोपेश' द्वारा लिखित 'गाँधीजी की प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति आस्था' लेख में अहिंसा सत्य एवं आस्था की बलवती शक्ति के परिणाम को दर्शाया गया है। प्रो. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'पदार्थविज्ञान एवं परमाणुवाद' में वेद एवं भारतीयदर्शन की चिन्तनधारा की वैज्ञानिकता दर्शायी गयी है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावनाशतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा